(U.G.C. Approved Peer Reviewed Refereed Journal) ISSN No. - 2319–5908

Hindi : Shodh Sandarsh-VIII, Vol.-XXVI, March 2020, Page : 186-187

General Impact Factor : 1.7276, Scientific Journal Impact Factor : 6.756

नवजागरण में असमीया साहित्य की भूमिका

*प्रशान्त लस्कर**

यह निर्विवाद है कि ब्रिटिशों के आगमन के पश्चात् ही कई मायनों में भारतीय समाज में काफी बदलाव आये। चाहे वे अंग्रेजों द्वारा लाया गया हो अथवा अंग्रेजों के शसन–शोषण के फलस्वरूप भारतीय मनीषा में उत्पन्न विकल्प के कारण ही क्यों न हो। डॉ. नगेन्द्र द्वारा सम्पादित हिन्दी साहित्य का इतिहास में लिखा है–''ब्रिटिश राज्य की स्थापना के कारण भारत की अर्थ–नीति, शिक्षा–पद्धति, यातायात के साधनों आदि में बुनियादी परिवर्तन हुए। इसके फलस्वरूप समाज का जो आधुनिकीकरण आरम्भ हुआ, वह पुराने धार्मिक संस्कारों, रीति–नीतियों, संगठनों के मेल में नहीं था। नये यथार्थ और पुराने संस्कारों के बीच सामंजस्य की आवश्यकता महसूस की जाने लगी। इस सामंजस्य के साथ ही नये भारतीय समाज के निर्माण की प्रक्रिया आरम्भ हुई।'' (पृष्ठ 437)

नव जागरण का सबसे अधिक प्रभाव बंगला साहित्य पर पड़ा। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने भी अपने इतिहास ग्रंथ 'हिन्दी साहित्य का इतिहास' में लिखा है कि भारतेन्दु हरिश्चन्द्र जी ने भी बंगला भ्रमण के दौरान ही नये ढंग के सामाजिक, देश–देशांतर सम्बन्धी ऐतिहासिक और पौराणिक नाटक, उपन्यास आदि देखे और हिन्दी में वैसी पुस्तकों के अभाव का अनुभव किया।

जब हम इस नवजागरण पर विचार करते हैं, हम देखे हैं कि जहाँ नयी आर्थिक व्यवस्था, पाश्चात्य शिक्षा और नवागत जीवन–पद्धति के कारण इस देश की पहचान खो गयी थी, वहाँ भारतीय मनीषा अपनी पहचान बनाये रखने के लिए अहोपुरोषार्थ किया। नवजागरण के अग्रदूतों ने पश्चिमीकरण के विवेकसम्मत परिवेश में अपनी संस्कृति को नये ढंग से संघटित करने का प्रयास किया। इसके फलस्वरूप साहित्यकारों के अतीत को सामने रखकर अपने को पुनः गौरवान्वित अनुभव किया और देश में उभरती हुई राष्ट्रीय चेतना को ठोस रूप दिया।

राष्ट्रीय भावना को देश के सभी प्रांत के कवियों ने अपने ढंग से जनता के सामने रखा। पहले ही हम कह चुके हैं कि हिन्दी में नवजागरण की भावना का प्रवाह बंगाल से ही आया था। ठीक वैसे ही असमीया साहित्य में भी हुआ। असम से कुछ लड़के उच्च शिक्षा प्राप्ति के लिए कोलकाता गये थे। वहीं उनका परिचय देश में प्रवाहित हो रही नवीन भावनाओं से हुआ। आनन्दराम ढेकियाल फुकन, हेमचन्द्र बरुवा, गुणाभिराम बरुवा, लक्ष्मीनाथ बेजबरुवा आदि इस नवजागरण से प्रभावित होकर संस्कारमूलक सक्रिय भूमिका ग्रहण करने के साथ–साथ असमीया साहित्य–संस्कृतिक परिचय के लिए प्राण–प्रण प्रयास किया।

यहाँ एक बात को हमें याद रखना है कि बाईकिल के जरिये जिस मानवतावादी दर्शन का जन्म हुआ था, वहीं मानवतावाद अठारहवीं सदी में रोमांटिक अभ्युत्थान के बीच नवीन रूप लेकर आया। परम्परागत दैविक और आध्यात्मिक सत्ता पर विश्वास परिहार करके मानव के मानवीय मूल्यों पर सर्वाधिक गुरुत्व देने वाली दृष्टि और दर्शन ही मानवतावाद है। यह मनुष्य की श्रेष्ठता को स्वीकारता है और यह भी विश्वास करता है कि मनुष्य से बढ़कर मनुष्य को नियंत्रण करने वाली शक्ति और कोई नहीं है।

मानवतावाद का यह स्वर यतान्द्र नाथ दुबारा की कविता में हम देखते हैं–

मानुहेइ देव, मानुहेइ सेव
मानुह बिने नाइ केव।
करा करा पुजा, पाद्य अर्घ्य लै

* *शोधार्थी, हिन्दी विभाग, तिलकामाँझी भागलपुर विश्वविद्यालय, भागलपुर*

जय जय मानव देव।

अर्थात् मनुष्य ही देवता है (आराध्य), मनुष्य ही सेवा के योग्य है। पाद्य–अर्घ्य लेकर इस मनुष्य की सेवा करो। फिर कहा है–

मानवी दनमदिया उटुवाइ
मानवी करम सोंते

अर्थात्, मानव जनम को मानवीय कर्म की धारा में बहा दो। मानव सेवा ही ईश्वर सेवा है।

इस प्रकार राष्ट्रीय भावना भी अनेक असमीया कवि की कविताओं में मूर्त हो उठी है। यथा, असमीया की महादेवी वर्मा कही जाने वाली कवि नलिनीवाला देवी की अपनी कविता में 'जन्मभूमि' के प्रति प्रेम को इस प्रकार दिखाया है–

मरिले पुनर अहि दुखीया देशते
लउँ जेन पुनर जनम

अर्थात् मरने के बाद भी इस दरिद्र देश में ही फिर मेरा जनम हो यही मेरी आशा है।

असम केशरी अम्बिकागिरी रायचौधुरी तो अपनी जातीय सत्वा के प्रति अत्यन्त जागरुक थे। उन्होंने देशवासी के प्रति आहवान करके कहा है–

जाग डेका तेज जाग, अजि जाग
स्वर्ग–मर्त्य कँपाइ जाग,
विनाशी जातिर दुख–दारिद्र्य
घृणित गोलामी कासिमा दाग।

फिर कहा है–

जि प्राणत देश सेवानत
अनल शिखा नाइ

राष्ट्रीय चेतना सम्पन्न कवि अपनी कविता के माध्यम से दो काम सम्पन्न करते है। एक, अपनी वैभवशाली इतिहास को जनमानस के समक्ष रख देते हैं और दूसरा, वर्तमान पीढ़ी को उन गौरवमयी इतिहास से परिचित करवाकर देश सेवा के प्रति प्रोत्साहित करते हैं। देश की हर वस्तु के साथ देशवासी को संपृक्त कराने का सराहनीय कार्य भी सम्पादन इन कवियों ने अपनी कविता के माध्यम से किया है। जैसे–हम भाषा को ही ले सकते हैं। भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, मैथिलीशरण गुप्त आदि ने जिस प्रकार अपनी भाषा के प्रति प्रेम–भावना के बिना राष्ट्र प्रेम असम्पूर्ण बताया है, ठीक उसी प्रकार अम्बिकागिरी रायचौधुरी जी की कविताओं में भी भाषा के प्रति प्रेम दृष्टिगोचर होता है। उन्होंने माना है कि समग्र मानव जातियों के विकास के जरिये ही महाजातीयता (भारतीय) मूल सत्वा का विकास संभव है। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि नवजागरण का प्रवाह देश के कोने–कोने में फैल गया है और हम यह भी कह सकते हैं कि इसी के फलस्वरूप भारतीयता को एक नयी दिशा मिली। साहितय, संस्कृति, भाषा आदि सभी क्षात्र में एक नवीन जागरूकता आयी। वर्तमान आज हम जिस समाज में मुक्त चिंता के साथ जी रहे हैं–यह काफी कुछ नवजागरण का ही दूरवर्ती फल के रूप में है।

सहायक ग्रन्थ–सूची

1. डॉ. नगेन्द्र (सं.)–हिन्दी साहित्य का इतिहास।
2. अम्बिकागिरि रायचौधुरी रचनावली–सम्पादक असम प्रकाशन परिषद।
3. अम्बिकागिरि राय चौधुरी साहित्य–कृष्णकांत सन्दिकै, लक्ष्मीनाथ बेजबरुआ

* * * * *